भक्तामर स्तोत्र, णमोकार मंत्र एवं उवसग्गहरं स्तोत्र
के अनुष्ठान द्वारा

उपचार की पध्धतियां

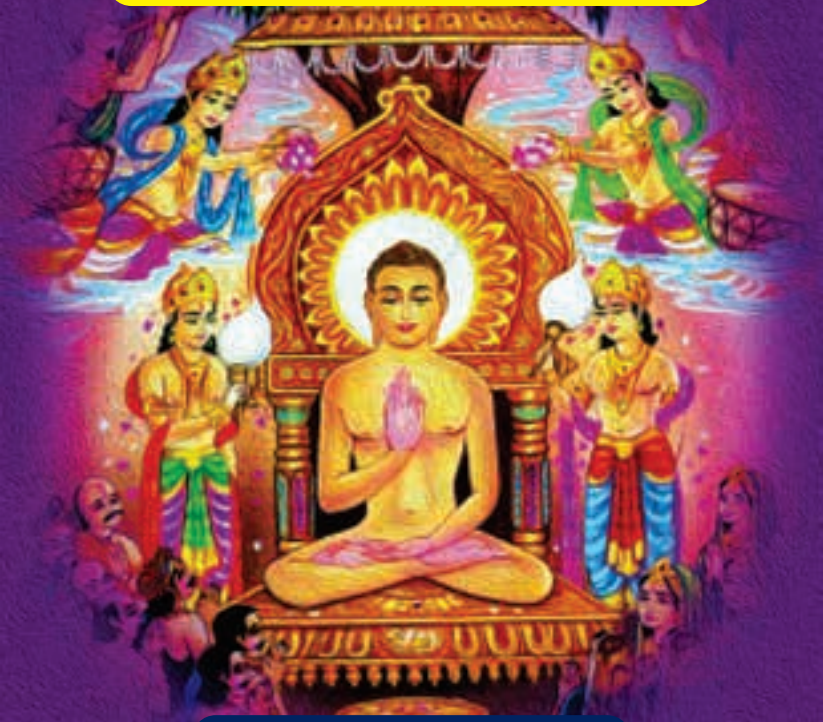

संकलन
डॉ. अमरेश मेहता

पिताजी की यादगार स्मृति में...

स्व. श्री चंद्रकान्त वालजीभाइ मेहता

१९२९ - २००१

मंत्र एवं श्लोक का महत्त्व :

शुरु से ही मंत्र भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहे है और मंत्र के उच्चार से जो वाइब्रेशन उत्पन्न होता है उसका मानव शरीर के कणकण में प्रसार होने से समग्र शरीर में उर्जा का संचार होता है जिससे अद्‌भूत परिणाम प्राप्त होता है । मंत्र के उच्चार से जो वाइब्रेशन पैदा होते है वह स्प्रींग की भांति होते है । ठीक उसी तरह ही, जब हम भक्तामर स्त्रोत्र का उच्चार करते है तब हमारा शरीर, मन और आत्मा एकाकार हो जाते है जिसके परिणाम स्वरुप हमारी चेतना में अद्‌भूत बदलाव आ जाता है । जब इस मंत्र का उच्चार नियमितरुप से २१ दिन तक एक ही स्थान और एक ही समय पर किया जाए तो व्यक्ति पर इसका अद्‌भूत असर होता है ।

मंत्रोच्चार कैसे करे ?

आदर्शरुप से, कोपर, ब्रास या कागज से जो यंत्र बनाया गया हो उसको मंत्रोच्चार के समय सामने रखकर मंत्रोच्चार दरमियान उस पर ध्यान केन्द्रित कर के मंत्रोच्चार करना चाहिए । श्लोक का उच्चार कम से कम एक बार करना चाहिए और उसके बाद १०८ बार मंत्रोच्चार करना चाहिए और रिध्धिका पाठ १०८ बार करना चाहिए । मंत्रोच्चार करने का सर्व श्रेष्ठ समय सूर्योदय (सुबह ४-३० बजे से सुबह ६-१५ बजे) से पहले का है जो कि ब्रह्म मुहुरत से जाना जाता है ।

मंत्रोच्चार सुबह १०-३० से ११-०० बजे तक भी किया जा सकता है । कुछ विद्वान ने तो ऐसा भी कहा है कि मंत्रोच्चार शाम को प-०० बजे से ७-०० बजे के समय की बीच में भी कर सकते है ।

यह मंत्रोच्चार नियमितरुप से कम से कम २१ दिन तक करने चाहिए और श्रेष्ठ परिणाम पाने के लिए बगैर नमक का खुराक इस दौरान लेना चाहिए । यह मंत्रोच्चार खुद के अलावा दूसरों के लिए भी कर सकते है । मंत्रोच्चार करने का दूसरा तरीका ओडियो या विडीयो टेप के साथ साथ इसका वहन करने का भी है ।

मंत्रोच्चार एवं श्लोकोच्चार का असर :

मंत्र एवं श्लोक के उच्चार का असर सिर्फ किसी मान्यता पर आधारित नहीं है और ना ही इसका असर दवाई जैसा है । वैज्ञानिक ने पूर्वकाल (भूतकाल) में कई बार 'मंत्रोच्चार का असर' पर संशोधन कर के यह जानने का प्रयास किया है कि मंत्रोच्चार का जो असर होता है वो क्यूं होता है ।

सर्व सामान्य रुप में, मंत्रोच्चार एवं श्लोकोच्चार का व्यक्ति के शरीर पर रोगहर असर होता है, इस से मानवशरीर के विविध अंगो के बिच एकराग स्थापित होने से मानवशरीर की प्राकृतिक रोगकारक क्षमता जागृत होती है एवं बुरी लत का त्याग करने में भी मदद मिलती है । यह बात के आल्फ्रेड थोमाटिस फ्रेन्च एकेडेमी ओफ सायन्स एवं मेडीसीन द्वारा की गई संशोधन एवं क्लिवलेन्ड युनिवर्सिटी के विशेषज्ञो द्वारा किए गये संशोधन में कही गई है ।

मनोभाषा एवं आत्मा संबंधित भाषा की असर के कारण ऐसा होता है । (NLE) (न्यूरो लिंग्विस्टिक इफेक्ट) वह है जो मंत्र के स्वरबद्ध उच्चार से उत्पन्न होती है और (PLE) (सामको लिंग्विस्टिक इफेक्ट) वह है जो उच्चारित किये गये मंत्र के अर्थ के प्रति मानवशरीर की प्रतिक्रिया के कारण उत्पन्न होती है । इन दोनो की वजह से हमारे दिमाग में शरीर के दर्द, रोग का शमन करने वाले एवं अच्छा महसूस करनेवाले रसायण उत्पन्न होते है और हमारे सारे शरीर में इस रसायण का प्रसार होता है ।

लंदन की द ईम्पीरिअल कोलेज के डो. एलन वोलकिन्स और अन्यों द्वारा किये गये अभ्यास से फलित हुआ है कि, मंत्रोच्चार करते वक्त मंत्र द्वारा उत्पन्न होनेवाले अवाज के कंपन से हार्ट रेट एवं ब्लड प्रेशर निम्नत्तम स्तर पर पहुंच जाते है । इसके अलावा, स्नायु को उत्तेजित करनेवाले स्राव का प्रमाण भी सामान्य स्तर पर पहुंच जाता है एवं कोलेस्टेरोल और बेकाबू मस्तिष्क तरंग पेटर्न भी सामान्य हो जाते है । इतना ही नहीं, केलिफोर्निआ युनिवर्सिटी के न्यूरो वैज्ञानिक मारिआन डायमंड ने ऐसा भी प्रस्थापित किया है कि, मंत्रोच्चार करने से तनाव उत्पन्न करनेवाले होर्मोन्स (स्राव) का भी शमन हो जाने से तनावमुक्ति का एहसास होता है ।

भक्तामर स्तोत्र

श्लोक नं.	लाभ
१.	सर्वोपद्रव–विनाशक
२.	सर्वाविघ्न–विनाशक
३.	शत्रुदृष्टि–बन्धक
४.	जलजन्तु अभय–प्रदायक
५.	लोचनकष्ट–मोचक (चक्षु के रोगो से मुक्ति के लिए)
६.	वियुक्तप्सक्ति–संयोजक (यादशक्ति-बुद्धिक क्षमता के लिए)
७.	भुजंगविष–उपशमक
८.	सर्वारिष्ट–संहारक
९.	दस्युतस्कर चौरभय विवर्जक (संतान प्राप्ति के लिए)
१०.	उन्मत्त श्वान-विष-विनाशक (शक्तिशाली दल बनाने के लिए)
११.	इष्ट व्यक्ति आमन्त्रक यंत्र
१२.	मदोन्मत हस्तिमद नाशक
१३.	विविध भय निवारक
१४.	वात व्याधि विद्यातक
१५.	राज वैभव प्रदायक
१६.	प्रतिद्वद्वी अवरोधक (आग बुझाने के लिए)
१७.	उदर पीड़ा नाशक (गुर्दे की विफलता के लिए चिकित्सा)
१८.	शत्रु सैन्य स्तंभक
१९.	तंत्र प्रभाव उच्चाटक (नौकरी, पदोन्नति और प्रगति के लिए)
२०.	विजय लक्ष्मी प्रदायक (प्रजनन क्षमता में सुधार के लिए)
२१.	सर्वाधीन कारक (परिवार में सुख और एकता बढाने के लिए)
२२.	व्यंतरादि भयनाशक (नकारात्मक उर्जा को हटाना - कोर्ट में मुकद्दमा जीतने के लिए)
२३.	प्रेत बाधा निवारक
२४.	सिर पीड़ा हारक

श्लोक नं.	लाभ
२५.	अग्नि ताप शामक (बुरी नजर और नकरात्मक हमलो से संरक्षण)
२६.	प्रसव वेदना विनाशक (सभी परेशानियां का नाश करने के लिए)
२७.	मंत्राराघक का उपसर्ग निवारक
२८.	इष्ट कार्य सिद्धि साधक
२९.	बिच्छु विष निवारक (व्यसन मुक्ति के लिए)
३०.	शत्रु सिंह आदि भय निवारक - समृध्धि एवं विजय के लिए
३१.	यश कीर्ति और प्रतिष्ठा दायक - त्वचा रोग के इलाज लिए
३२.	संग्रणीय उदर पीड़ा संहारक
३३.	ताप ज्वर शामक
३४.	गर्भ रक्षा कारक
३५.	प्रकृति प्रकोप नाशक
३६.	सर्व संपत्ति लाभदायक (धातु व्यापार में धन प्राप्ति)
३७.	दुष्ट वचन अवरोधक
३८.	मदोन्मत्त गज वशीकरण कारक
३९.	सन्मार्ग दर्शक
४०.	अग्नि प्रकोप शामक
४१.	विष प्रभाव प्रतिरोधक
४२.	युद्ध अवरोधक
४३.	अस्त्र शस्त्र प्रभाव कारक
४४.	प्रलय तूफान भय निवारक
४५.	असाध्य रोग निवारक
४६.	कारागृह बंधन मोचक
४७.	अस्त्र शस्त्र निष्क्रिय कारक
४८.	सर्वाधीन कारक (धन-वैभव प्राप्ति के लिए)

णमो अरिहंताणं,
णमो सिध्दाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं ।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पाव प्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

मनुष्य का सबसे बडा बल आत्म-बल है । णमोकार महामंत्र-एक लोकोत्तर मंत्र है । इसमें दर्शन, स्मरण, चिन्तन, ध्यान एवं अनुभव किया जाता है । इसलिए यह अनादि और अक्षयस्वरुपी मंत्र है । णमोकार मंत्र सर्वकार्य सिद्धि कारक लोकोत्तर मंत्र माना जाता है ।

जीवन में आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याएँ, जो अधिकतर मानसिक दुर्बलता से उत्पन्न होती है, उनको सुलझाने में णमोकार महामंत्र के चमत्कारी प्रभाव का उपयोग भी वे कर सकेंगे ।

णमोकार-स्मरण से अमुक लोगों के रोग, दरिद्रता, भय, विपत्तियां दूर होने की अनुभव सिद्ध घटनाएँ सुनी जाती हैं । णमोकार मंत्र हमें जीवन की समस्याओं, कठिनाईयों, चिन्ताओं, बाधाओं से पार पहुँचाने में सबसे बडा आत्म-सहायक है । अरिहंत-सिद्ध-आयरिय-उवज्झाय-साहू-इन सोलह परम अक्षरों वाला बीज एवं बिन्दु से गर्भित यह पंच नमस्कार चक्र परम उत्तम है । यह पंच नमस्कार चक्र, सूर्य के समान ज्योतिर्मय है । श्री हेमचन्द्राचार्य, शुभचन्द्राचार्य आदि ने इसे 'षोडशाक्षरी विद्या' बताया है ।

चित्र में बताये अनुसार - एक एक पत्र (पंखुडी) पर एक एक अक्षर का ध्यान करते हुए साधक अपने हृदय के भीतर इस महाचक्र को घुमाते हुए देखें, और उसके बीज पांच पदों के प्रथम बीजाक्षर अ-सि-आ-उ-सा को चमकते हुए देखें । प्रातः तथा संध्या के समय शुभ भावपूर्वक इस सोलह अक्षरी मंत्र का जप करना चाहिए ।

नमस्कार चक्र का भावपूर्वक ध्यान करने से चोर, हिंसक प्राणी, विषधर-सर्प आदि, जल, अग्नि के उपद्रव, शत्रु के बन्धन, राक्षस, दुष्ट ग्रह, भूत-प्रेत आदि के उत्पात, सभी प्रकार के भय पलायन कर जाते हैं तथा लक्ष्मी, सरस्वती, ऋद्धि, समृद्धि आदि दिव्य विभूतियाँ स्वयं आती हैं । देव-दानव, नरेन्द्र आदि सभी इसकी वन्दना करते हैं ।

चैतन्य केन्द्र पर ध्यान : आत्मशक्ति का जागरण

हमारा शरीर एक विशाल विद्युत गृह जैसा है । स्विच के भांति इसमें अनेक संवेदन केन्द्र है; जिन्हें चेतना केन्द्र कहते हैं । यूँ तो शरीर में छोटे-बडे सैंकडो स्विच (केन्द्र) है, परन्तु मुख्य रुप में तेरह चेतना केन्द्र माने गये है, उनमें भी पांच बहुत महत्त्व के है । णमोकार मंत्र के अक्षर एवं रंगो के साथ शरीर में स्थित चेतना केन्दों का गहरा सम्बन्धहै ।

इस चित्र में दिखाये गये केन्द्रों पर ध्यान दीजिए । जैसे-ज्ञान केन्द्र, ललाट पर है । यह केन्द्र शरीर में ज्ञान का संवाहक है । णमो अरिहंताणं पद को ज्ञान केन्द्र पर सफेद रंग में एकाग्र होकर देखने/जपने से ज्ञान शक्ति जाग्रत होती है । मस्तिष्क सक्रिय हो जाता है । उर्जा दौडने लगती है । दीर्घकालीन गहरे अभ्यास से दिव्य दृष्टि भी प्राप्त हो जाती है ।

ज्ञान केन्द्र जाग्रत होने पर ज्ञान शक्ति व विवेक-बुद्धि का विकास और विकारों की शुद्धि होती है । -दर्शन केन्द्र जाग्रत होनें पर स्फूर्ति एवं आत्मिक उल्लास प्रकट होता है । - विशुद्धि केन्द्र सक्रिय होने पर तेज, ओज, प्रभाव और इच्छा शक्ति प्रबल होती है । - आनंद केन्द्र सक्रिय होने पर शान्ति, एकाग्रता और आनन्द की अनुभूति होती है । - शक्ति केन्द्र जाग्रत होने पर सहिष्णुता एवं क्षमता बढती है ।

दर्शन केन्द्र
णमो सिद्धाणं
ज्ञान केन्द्र
णमो अरिहंताणं
विशुद्धि केन्द्र
णमो आयरियाणं
आनन्द केन्द्र
णमो उवज्झायाणं
शक्ति केन्द्र
णमो लोए सव्व साहूणं

सहस्त्राधार-चक्र : मस्तिक पर -

शिव/रंग परख की सभानता में एकसूत्रता/दैवी बुध्धिमता का वरदान । शीर्षग्रंथी, बडा दिमाग एव दांयी आंख ।

आज्ञा-चक्र : कपाल पर

ज्ञान/अंतः स्फुरणा/स्व पर काबू का ख्याल, बुध्धि, पियुषी ग्रंथि की कल्पना, रीढ, छोटा दिमाग, बांयी आंख, नाक एव कान ।

विशुध्ध-चक्र : गले पर

संदेशा व्यवहार / सर्जनशक्ति / अंतः स्फुरणा / स्व अभिव्यक्ति का सुचारुपन / सत्य बोलने और सुनने की इच्छा । थायरोइड ग्रंथि, गला, उपर के फेफडे, हाथ, पाचन नलिका ।

अनाहत-चक्र : छाती के मध्य भाग पर

अनुकंपा/प्रेम/स्व स्वीकार की खुले दिल के साथ इच्छा के साथ आवेश पर काबू, सामजस्य, एकाग्रता, थायमस का स्थान, ह्दय, फेफडे, रक्त परिभ्रमण ।

माणिपुर-चक्र : नाभि से थोडा उपर

इच्छा / शक्ति / आनंद / प्रेरणा / स्वमान परिवर्तन, पहचान / अन्यों के साथ संबंधमें खुद की शांत शक्ति पर प्रभुत्व / अपने आप को व्यक्त करने की स्व इच्छा की उर्वा को टिकाये रखना । अग्न्याशय, पेट, कलेजा, पिताशय ।

स्वाधिष्टान-चक्र : नाभि से थोडा नीचे

संबंध/ जातियता / सहानुभूति / आनंद / कल्याणमयी संपर्क, खुशनुमा एहसास, विचारभिन्नता, जननग्रंथि एवं जननांग में बदलाव, पांव ।

मूलाधार-चक्र : रीढ का आधार

शक्ति / अभिव्यक्ति अस्तित्व / प्राथमिक शिक्षा / गुरुत्वाकर्षण स्थिरता का विश्वास, वचाव, आत्मरक्षा मूलाधार बिंदू में परिवर्तन, भौतिक दुनिया से जुडे रहने की इच्छा ।

णमोकार ध्यान के तीन आधार

ऊँकार में णमोकार ध्यान

ऊँ कार शब्द-शक्ति का मूल है । समस्त मन्त्रों में सर्वश्रेष्ठ है । दीर्घ श्वास के साथ 'ऊँ बोलने से शरीर के चेतना केन्द्रों में एक नाद गूंजने लगता है, जो समग्र सुप्त चेतना को जागृत कर देता है ।

वैदिक परम्परानुसार 'ऊँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीन महाशक्तियों का बीज है । जैन आचार्योने 'ऊँ शब्द को पाँच परमेष्ठी का वाचक बताया है ।

चित्र में दिखाया है 'ऊँ अक्षर की मात्राओं पर एक एक पद उसी रंग के अनुसार ध्यान करते रहने से मन में 'ऊँ की आकृति उन्हीं रंगों में दीखने लगती है ।

अष्टदलकमल में नवपद ध्यान

अष्टदल कमल पर णमोकार महामंत्र की स्थापना कर के कमल की मध्यकर्णिका पर श्वेत रंग में णमो अरिहंताणं पद का ध्यान करें, फिर पूर्व-पश्चिम आदि चारो दिशाओं की एक एक पंखुडी पर चारों पदों का तथा चारों विदिशा की पंखुडियों पर एसो पंच णमोकारो के चारों चूलिका पदों का ध्यान करे ।

९ ग्रह की शांति के लिए नवकार मंत्र का जाप

शुक्र एवं चंद्र : शुक्र एवं चंद्र श्वेत रंग के है । इसलिए उनकी विपरीत असर को मिटाने के लिए या शांत करने के लिए **ओम ह्रीं णमो अरिहंताणं** का जाप करते हुए ध्यान करते वक्त श्वेत रंग को महसूस करना चाहिए । इस तरह से यह जाप एक हजार बार करना चाहिए ।

सूर्य एवं मंगल : सूर्य एवं मंगल लाल रंग के है । इसलिए उनकी विपरीत असर को मिटाने के लिए या शांत करने के लिए **ओम ह्रीं णमो सिध्धाणं** का जाप करते हुए ध्यान करते वक्त लाल रंग को महसूस करना चाहिए । इस तरह से यह जाप एक हजार बार करना चाहिए ।

गुरु : गुरु / बृहस्पति का रंग पीला है । इसलिए उनकी विपरीत असर को मिटाने के लिए या शांत करने के लिए **ओम ह्रीं णमो आयरियाणं** का जाप करते हुए ध्यान करते वक्त पीले रंग को महसूस करना चाहिए । इस तरह से यह जाप एक हजार बार करना चाहिए ।

बुधः बुधका रंग हरा है । इसलिए उनकी विपरीत असर को मिटाने के लिए या शांत करने के लिए **ओम ह्रीं णमो उवज्झायाणं** का जाप करते हुए ध्यान करते वक्त हरे रंग को महसूस करना चाहिए । इस तरह से यह जाप एक हजार बार करना चाहिए ।

शनि, राहु एवं केतु : शनि, राहु एवं केतु का रंग काला है । इसलिए उनकी विपरीत असर को मिटाने के लिए या शांत करने के लिए **ओम ह्रीं णमो लोए सव्व साहूणं** का जाप करते हुए ध्यान करते वक्त काले रंग को महसूस करना चाहिए । इस तरह से यह जाप एक हजार बार करना चाहिए ।

णमो अरिहंताणं,
णमो सिध्दाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं ।

Shree Uvasaggaharam Stotra

उवसग्गहरपासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ।
विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥१॥

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह-रोग-मारी-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥

चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ ।
नर-तिरिएसु विजीवा, पावंति न दुक्ख-दोगच्चं ॥३॥

तुह सम्मत्ते लध्दे, चिंतामणिकप्पायवब्भहिए ।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥

इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भरनिब्भरेण हियएण ।
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥

उवसग्गहरं स्त्रोत का नाम ही सूचित कर रहा है कि - इस स्त्रोत का पठन करने से उपद्रव, मुश्किले, अनिष्ट तत्व आदि का शमन हो जाता है।

लगातार छह मास तक इस स्त्रोत का जाप (पठन) पूर्व दिशा की तरफ मुख रखके, पवित्र एवं शुध्ध वस्त्र धारण कर ध्यान एवं भावपूर्वक करने से मानसिक तनाव शारीरिक व्याधि, अकारण भय आदि दूर हो जाते है और अद्‌भूत प्रसन्नता का एहसास होता है।

जो लोग भयंकर स्वप्न से पिडीत, अनिंद्रा से पिडीत और रात में डर का अनुभव कर रहे है वह लोग रात में सोने से पहले एक **नवकार** एवं एक **उवसग्गहरं** स्त्रोत का पठन सात बार करे तो उनकी यह सारी तकलीफें दूर हो जाती है।

इस स्त्रोत का नियमित पठन करने से आत्मा प्रकाशमान बनती है और आत्मशक्ति में वृध्धि होती है।

आखिर, एसा कह सकते है की पार्श्वनाथ भगवान मंगल एवं कल्याण की साक्षात मूरत है। उनकी स्तुति करने से उपसर्गो का शमन, संपति का उत्कर्ष और तन-मन की निरोगिता उपलब्धहोती है।

सर्वोपद्रव-विनाशक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं
ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः
अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १

भक्तामर प्रणतमौलि–मणिप्रभाणा–
मुद्द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादुयुगं युगादा–
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।१।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे देवता भगवान आदिनाथजी के कमलपाद (पद्मपाद) को गहरी भक्तिभाव से नमन कर रहे है। आचार्य मानतुंग भगवान आदिनाथ के गुणगान गाते गाते अपने हाथो को जोडे हुए संपूर्ण तरह से भगवान के चरणो मे समर्पित हो गये है। सारे देवता, जो कि भगवान का आश्रय पाना चाहते है, वह इस संसार रूपी भवसागर को निश्चित रूप से पार कर जायेगे।

सर्वविघ्न–विनाशक
मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः ।
(सकलार्थ सिद्धिणं) ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि–जिणाणं

श्लोक - २

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधात्–
दुद्भूतबुद्धि पटुभिः सुरलोकनाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ॥ २ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सबसे कुशाग्र बुद्धिवाले देवता भी जिनको पूजते है वैसे भगवान जिनेन्द्र को अपने आप को अज्ञानी जैसा दिखानेवाले आचार्य मानतुंग भी प्रार्थना कर रहे है ।

शत्रुदृष्टि–बन्धक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः
सर्वसिद्धिदायकेभ्यो: नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि–जिणाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ३

बुद्धया विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्बम्–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

एक तरफ एक बालक जल में पड रहे चंद्र के प्रतिबिंब को पकड ने का व्यर्थ प्रयास कर रहा है, दूसरी ओर, अपने आप को अज्ञानी बताने वाले आचार्य मानतुंग भगवान आदिनाथ की पूर्ण श्रध्धा से प्रार्थना करने का प्रयास कर रहे है ।

जलजन्तु अभय–प्रदायक

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जल देवताभ्यो नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि–जिणाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ४

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांङ्कान्तान् ।
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्धया ।
कल्पान्तकालपवनोद्धतनक्रचक्रं–
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम् ॥४॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

आचार्य मानतुंग भगवान को यह विवरण करने का प्रयास कर रहे हैं कि मगरमच्छ से भरे हुए सागर को वृहस्पति भी पार नहीं कर सके हैं इसलिए वह भी पार करने के लिए असमर्थ हैं ।

लोचनकष्ट–मोचक

(चक्षु के रोगो से मुक्ति के लिए)

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व संकट निवारणेभ्यो:
सुपार्श्व यक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हँ अणंतोहि–जिणाणां
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ५

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश ।
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ।
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाऽभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

मैं शक्तिहिन हूँ ऐसा स्वीकारनेवाले आचार्य मानतुंग भगवान को प्रार्थना करने का कठोर परिश्रम कर रहे है; दूसरी ओर अपने बच्चे कै प्रति प्रेम के कारण क्रोधित सिंह का डटकर मुकाबला हिरन कर रहे है ।

वियुक्तसक्ति–संयोजक

(यादशक्ति-बुद्धिक क्षमता के लिए)

मन्त्र

ॐ ह्रं श्रां श्रीं श्रूं श्रः हं सं यः यः ठः ठः
सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कुट्ठ-बुद्धीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ६

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्माम् ?
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निकरैक-हेतुः ॥ ६ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

कोयल मीठे सूर से गीत गा रही है, आम के मीठे फल को अपनी चोंच से खुरेदकर उसे खा रही है, दूसरी और आचार्य मानतुंग और उनके अनुयायी भगवान के भक्तिभाव में संपूर्ण रूप से लीन होकर उनकी भक्ति (पूजा) करने का प्रयास कर रहे हैं ।

भुजंगविष–उपशमक मन्त्र

ॐ ह्रीं हं सौं श्रां श्रीं क्रौं क्लीं सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रवकष्टनिवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।
ॐ ह्रीं क्लीं नमः ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीअबुद्धीणं ।
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ७

त्वत्संस्तवेन भवसन्ततिसन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ।
आक्रान्तलोकमलिनीलमशेषमाशु
सुर्याशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम् ॥ ७ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सूर्योदय होने से जैसे अंधकार संपूर्ण रूप से गायब हो जाता है, वैसे ही अपने आप को भक्ति में संपूर्ण रूप से समर्पित करने वाले अनुयायी के सारे पाप और मनोविकार संपूर्ण रूप से गायब हो जाते है ।

सर्वारिष्ट-संहारक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे
फट् विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा ।
ॐ ह्रीं लक्ष्मणरामचन्द्र देव्यै नमो नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं अर्हं णमो पयाणुसारिणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ८

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद–
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः ॥ ८ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

तालाब (सरोवर) में संपूर्ण रूप से खिले हुए कमल की पंखुडी पर ओस की बूंदे अति मनोभावना (सुंदर) दिखती हैं, वैसे ही आचार्य मानतुंग द्वारा संपूर्ण रूप से समर्पित होकर की गई भक्ति मोतियों की तरह चमकदार (खुबसूरत) हैं ।

दस्युतस्कर चौरभय विवर्जक

(संतान प्राप्ति के लिए)

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं क्लीं रः रः रः हं हं नमः ।
ॐ नमो भगवते जय यक्षाय ह्रीं ह्रूँ नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं
ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहाः ।
ॐ ऋद्धये नमः ।

श्लोक - ९

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभाञ्जि ॥ ९ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सूर्य के किरणों की वजह से जैसे सरवोर में कमल खिलते हे वैसे ही भगवान की सच्चे मन से प्रार्थना (भक्ति) करने से (भगवान की कृपादृष्टि पडते ही) भक्तजनों के सारे पाप धूल जाते है ।

उन्मत्त श्वान-विष-विनाशक

(शक्तिशाली दल बनाने के लिए)

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः
सिद्ध-बुद्धि कृतार्थो भव वषट् संपूर्ण स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो फत्तेअबुद्धीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - १०

नात्यद्भूतं भुवनभूषणभूत नाथ ।
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति ।। १० ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

अपने मालिक से दान पाकर जैसे चाकरगण (**Servants**) धन्य हो जाते हैं वैसे ही, भगवान से गुण पाकर भक्तजन भी धन्य हो जाते हैं ।

इष्ट व्यक्ति आमन्त्रक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्राँ श्रीं कुमति–
निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो आगासगामीणं ।
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ११

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरशितुं क इच्छेत्? ॥ ११ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

ब्रह्मा और विष्णु के दर्शन होने के बावजूद भी संतुष्ट नहीं होने वाले भक्त बिना पलक झपकाये भगवान के सुंदर रूप को भावविभोर होकर देख रहा है । जिसने हाल ही में दुग्ध से भरे हुए समंदर का आचमन किया है वह खारे समुद्र का पानी नहीं पी सकता है ।

मदोन्मत हस्तिमद नाशक यंत्र

मन्त्र

ॐ अँ अँ अं अः सर्व राजा-प्रजा मोहिनी
सर्व जन वरधं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं णमो बुद्धबोधीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - १२

यैः शान्तरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां
यत्ते समानमपरं न हि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सुंदर तरीके से सुशोभित भगवान के युवा देह को चित्र में दर्शाया गया है । आचार्य मानतुंग और चारो लोक के देवता ऐसे सुंदर भगवान का प्रसंशागान कर रहे है ।

विविध भय निवारक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं हं सः हौं ऐं हाँ ह्रीं द्रां द्रीं द्रौं द्रः
मोहिनी सर्व जन वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उज्जुमईणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - १३

वक्त्रं क्वते सुरनरोरगनेत्रहारि
निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्बं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पाण्डुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भगवान आदीनाथ के दिव्य मुख का दर्शन कर के कल्पवासी देवता, नागकुमार और मनुष्यगण धन्यता का अनुभव कर रहे हैं । दुसरी ओर चंद्र उनके समान तेजहीन, फिका और दागनुमा (Full of Spot) लग रहा है जैसे दिन के समय में भी पलाश के वृक्ष के पर्ण (Leaves) पीले रंग के दिख रहे हो ।

वात व्याधि विद्यातक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो भगवती गुणवती महामानसी स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वियंबुद्धीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १४

स्म्पूर्णमण्डलशशाङ्ककलाकलाप-
शुभ्रा गुणास्त्रि भुवनं तव लंधयन्ति ।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं
कस्तान्निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।। १४ ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

पूर्णिमां के चांद की रोशनी की तरह भगवान के अनगिनत गुण (Virtues) त्रिलोक में फैल रहे हैं। चक्रवर्ती, धरनेन्द्र और देवेन्द्र के साथ - साथ आचार्य मानतुंग भगवान को प्रार्थना कर रहे हैं।

राज वैभव प्रदायक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी वज्र-
श्रृंखला मानसी महामानसी स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - १५

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभि-
नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ।
कल्पान्तकालमरुता चलिताचलेन
किं मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे पर्वतों को नष्ट कर सके ऐसा विपरित काल भी सुमेरू को तसुभार हानि नहीं पहुंचा सका वैसे ही सुमेरु पर्वत की तरह अडग भगवान आदिनाथ को अतिसुंदर देवदुत भी जरा सा भी चलित नहीं कर सके ।

प्रतिद्वंदी अवरोधक यंत्र

(आग बुझाने के लिए)

मन्त्र

ॐ नमोः सुमंगला सुसीमा नाम देवी समीहितार्थ
वज्र श्रृंखला कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वीणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १६

निर्धूमवर्तिरपवर्जिततैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रटीकरोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

दिये की चलित ज्वाला काला धुंआ (Black Smoke) छोड रही है । दूसरी ओर गुण से भरे हुए भगवान आदिनाथ बिना धुंए के समग्र ब्रह्मांड को प्रकाशित कर रहे है ।

उदर पीड़ा नाशक यंत्र

(गुर्दे की विफलता के लिए चिकित्सा)

मन्त्र

ॐ णमो णमिऊण अट्टे, मट्टे, क्षुद्र विधट्ठे क्षुद्रःपीडां जठर पीडां,
भंजय-भंजय सर्व पीडा सर्वरोग निवारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महानिमित्त-कुसलाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १७

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति ।
नाम्भोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र ! लोके ॥ १७ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है कि राहु सूर्य को निगल रहा है परंतु भगवान आदिनाथ को छूने तक की हिंमत किसी में भी नहीं है ।

शत्रु सैन्य स्तंभक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते जये विजये मोहय मोहय
स्तम्भय स्तम्भय स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउयण-इढि पत्ताणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १८

नित्योदयं दलित-मोह-महान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्वशशाङ्कबिम्बम् ॥ १८ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

राहू और बादलों की असहायता से चंद्र विचलित हो रहा है । भगवान अदिनाथ को कुछ भी विचलित नहीं कर सकता । चित्र में दर्शाये गये हंस और उसका बच्चा भगवान के गुणों की संपूर्ण योग्यता को बर्या कर रहे है ।

तंत्र प्रभाव उच्चाटक यंत्र

(नौकरी, पदोन्नति और प्रगति के लिए)

मन्त्र

ॐ ह्यां ह्रीं ह्रूँ ह्रः यक्षः ह्रीं वषट् फट् स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - १९

किं शर्वरीषु शशिनाहि विवस्वता वा
युष्मन्मुखेन्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ।
निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः ॥ १९ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

पकी हुई फसल के लिए जैसे ज्यादा पानी की कोई उपयोगिता नहीं है वैसे ही भगवान आदिनाथ के गुण के सामने सूर्य और चंद्र की रोसनी का भी कोइ मूल्य (उपयोगिता) नहीं है ।

विजय लक्ष्मी प्रदायक यंत्र

(प्रजनन क्षमता में सुधार के लिए)

मन्त्र

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणसाणभावणाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २०

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसे चमकते हुए रत्नों के सामने कांच के टुकडों की चमक बिलकुल फिक्की है वैसे ही भगवान आदिनाथ की शक्तियों के सामने ब्रह्मांड की कोई भी चीज फिक्की है (टिक नहीं सकती ।) ।

सर्वाधीन कारक यंत्र

(परिवार में सुख और एकता बढाने के लिए)

मन्त्र

ॐ नमो भगवते शत्रुभयनिवारणाय नमः
ॐ नमः श्री मणिभद्रजय-विजय अपराजिते
सर्व सौभाग्यं सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २१

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन् मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ॥ २१ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसा की चित्र में दर्शाया गया है, ब्रह्मांड के सारे देवता किसी ना किसी देवीयों के साथ संपूर्णरूप से जुडे हुए पाए गये हैं । परंतु भगवान आदिनाथ किसी भी आसक्ति के साथ जुडे हुए नहीं हैं और हंमेशा ऐसी आसक्ति से पर (Detached) हैं और सर्वत्र ध्यानमग्न रूप में पाये जाते हैं । जब हम ऐसे भगवान को देखते हैं तब हमें संपूर्ण संतोष मिलता है और हम चरमसीमा को पा लेते हैं ।

व्यंतर आदि भय नाशक यंत्र

(नकारात्मक उर्जा को हटाना - कोर्ट में मुकद्दमा जीतने के लिए)

मन्त्र

ॐ नमो श्री वीरेहिं जृम्भय जृम्भय, मोहय-मोहय,
स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अरिहंताणं । णमो आगासगामिणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २२

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम् ॥ २२ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, रिषभदेव की माता बाकी सब माता से एकदम खास (विशिष्ट) है । उन्होने पूर्व में तपते सूर्य जैसे महान आदिनाथ को जन्म दिया है और ब्रह्मांड की बाकी सारी माता ने तारे जैसे पुत्रों को जन्म दिया है, जिनका सूर्य के सामने कोई मोल नहीं है ।

प्रेत बाधा निवारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवती जयवती मम समीहितार्थ मोक्ष सौख्यं
कुरु कुरु स्वाहा । ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्व सिद्धाय श्रीं नमः ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी-विसाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २३

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः परस्तात् ।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्यु,
नान्यःशिवःशिव-पदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः ॥ २३ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे तपस्वी को गुणसभर (गुणों से भरे हुए) भगवान आदिनाथ आनंद प्रदान कर रहे हैं । भगवान के दर्शन होते ही जन्म और मरण की सारी यातनाओं पर विजय मिल जाता है ।

सिर पीड़ा हारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते बद्धमाणसामिस्स
सर्व समीहितं कुरुकुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि-विसाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २४

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य मसंख्य-माद्यम्,
ब्रह्माण-मीश्वर-मनन्त-मनंग-केतुम् ।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकम्,
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः ॥ २४ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे अनुयायी गण अपनी अंतरात्मा के अनुसार भगवान के गुणगान गा रहे हैं (भगवान की स्तुति कर रह हैं) ।

अग्नि ताप शामक यंत्र

(बुरी नजर और नकरात्मक हमलो से संरक्षण)

मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा ज़ौ ज़ौ स्वाहा । ॐ नमो भगवते जये विजये अपराजिते सर्व सौभाग्यम् सर्वसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग-तवाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २५

बुद्धस्त्व-मेव विभुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय-शंकरत्वात् ।
धातासि धीर ! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, भगवान अगणित गुणों से भरे हुए है। अनुयायी (भक्तह्रजन) ऐसा खास अनुभव कर रहे है जैसे भगवान आदिनाथ ही उनके समक्ष शंकर, क्रृष्ना, ब्रह्मा और विष्णु के रूप में उपस्थित है।

प्रसव वेदना विनाशक यंत्र

(सभी परेशानियां का नाश करने के लिए)

मन्त्र

ॐ नमो भगवती ऊँ ह्रीं श्रीं क्लीं हूँ ह्रः
पुरुष स्त्रीजनजन्म जीवआर्ती पीडानिवारण कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २६

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि-शोषणाय ॥ २६ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

इन्द्र, धरनेन्द्र और चक्रवर्ती के साथ-साथ आचार्य मानतुंग भक्तिभाव से भगवान आदिनाथ की वंदना कर रहे हैं और ऐसा करके अपने सारे पापकर्मों और दुःखों से मुक्ति पा रहे हैं ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

मंत्राराधक का उपसर्ग निवारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्र धारिणी-चक्रेण-अनुकूलं
साधय साधय शत्रून उन्मूलय-उन्मूलय स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते सर्वार्थसिद्धाय सुखाय ह्रीं श्रीं नमः ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २७

को विस्मयोऽत्र यदि नामगुणै-रशेषै-
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश ।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात गर्वैः,
स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥ २७ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भगवान आदिनाथ सद्गुणों से भलीभांति (अच्छी तरह से) परिचित है, जबकि दूसरी ओर जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, पापकर्म पूर्णतय (संपूर्णरूप से) भयभीत है और भगवान की कृपादृष्टि के लिए तरस रहा है।

इष्ट कार्य सिद्धि साधक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते जये विजये जृम्भय-जृम्भय, मोहय, मोहय,
सर्व सौभाग्यं सम्पत्ति - सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं
झ्रां झ्रीं नमः स्वाहा ।

श्लोक - २८

उच्चैरशोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-,
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत् किरण-मस्त-तमो-वितानम्,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्ववर्ति ।। २८ ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है, बादलों के पास में दिखाई देने वाले सूर्य की तुलना में भगवान आदिनाथ का आभामंडल (तेजमंडल) बहुत ही तेजस्वी दिख रहा है ।

बिच्छु विष निवारक यंत्र

(व्यसन मुक्ति के लिए)

मन्त्र

ॐ णमो णमिउण पास विसहर फुल्लिगमंतो विसहर नामक्षर मंतो सवसिद्धेमीहे इह समरंताणं, मणे जागइ कप्पदुमव्व सर्वार्थसिद्धिः ॐ नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं

श्लोक - २९

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ।
बिम्बं वियद्-विलसदंशु-लता-वितानम्,
तुगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

एक ओर, ऊँचे पर्वशिखरों पर सूर्य सुंदर दिख रहा है । दूसरी ओर, भगवान का स्वर्णदेह उस से भी ज्यादा सुंदर दिख रहा है ।

शत्रु सिंह आदि भय निवारक यंत्र

समृध्धि एवं विजय के लिए

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ।
अठ्ठे मट्टे क्षुद्र विघट्टे क्षुद्रान्, स्तम्भय-स्तम्भय रक्षां कुरु - कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ३०

कुन्दावदात-चलचामर चारु शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम् ।
उद्यच्छशांक-शुचि-निर्झर-वारिधार-
मुच्चैः-स्तटं-सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ॥ ३० ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे के सारे ६४ ६८ भक्तजन सब से ज्यादा सुंदर दिख रहे है जिनकी उपासना शिष्तबध्ध देवता कर रहे है और ऐसा लग रहा है जैसे स्वर्णिम सुमेरु पर्वत पर से दूध जैसे सफेद पानी का सबसे सुंदर प्रवाह बह रहा हो ।

यश कीर्ति और प्रतिष्ठा दायक यंत्र

त्वचा रोग के इलाज लिए

मन्त्र

ॐ उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि कम्म-घण-मुक्कं विसहर
विसणिण्णासं मंगल कल्लाण आवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३१

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांककान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम् ।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम् ।
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भगवान के मष्तिष्क के ऊपर दिख रहीं तीनों श्रृंगारित और दिव्य छत्रियाँ प्रकाशमान चंद्र की तरह अति सुंदर तीनों ब्रह्मांड की संपूर्ण उपस्थिति दर्शा रहीं हैं ।

संग्रणीय उदर पीड़ा संहारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व-दोष निवारणं कुरु-कुरु स्वाहा ।
सर्व सिद्धि वृद्धि वांछां पूर्ण कुरु - कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुण बंभ यारिणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३२

गंभीर-तारः रव-पूरित-दिग्विभाग-
स्त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः ।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्भवति ते यशसः प्रवादी ॥ ३२ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जैसे ही भगवान को सर्वज्ञान की प्राप्ति हुई, सारे देवता ने शहनाई बजाकर उसकी घोषणा की - जिसको सुनकर सारे पुरुष, स्त्री और अन्य जीव भगवान का दिव्यदर्शन पाने के लिए उत्सुक हो गये ।

ताप ज्वर शामक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ध्यान सिद्धि परम-योगीश्वराय
नमो नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो-सहि-पत्ताणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३३

मन्दार-सुन्दर-नमेरु-सुपारिजात,
सन्तानकादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा ।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां तति-र्वा ।। ३३ ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे देवगण आकाश में से विविध तरह के सुगंधित पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं और ऐसा लग रहा है जैसे भगवान का दिव्य आवाज सुनाई दे रहा है ।

गर्भ रक्षा कारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह्रसौं पद्मावत्यै देव्यै नमो नमः स्वाहा ।
ॐ प च य म ह्राँ ह्रीं नमः ।

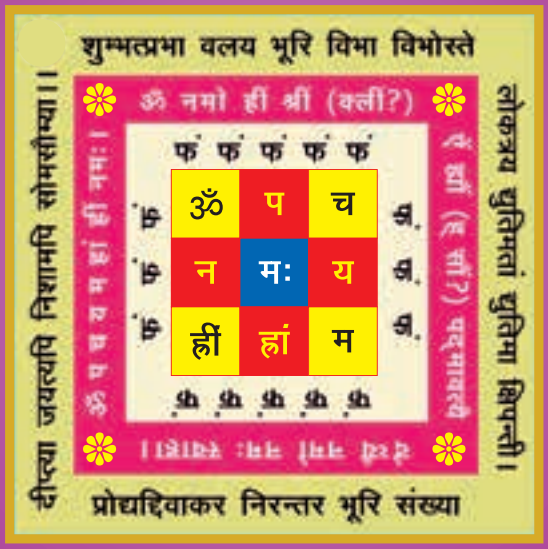

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेलोसहिपत्ताणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३४

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि विभा विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ति ।
प्रोद्यद्-दिवाकर-निरनतर-भूरि-संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम् ॥ ३४ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सूर्य और अन्य ग्रहों का प्रकाश भी एक साथ मिलकर भगवान की दिव्य आभा के प्रकाश के सामने फिका लग रहा है ।

प्रकृति प्रकोप नाशक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं अर्हं नमो जये विजये अपराजिते महालक्ष्मी ।
अमृत वर्षिणी अमृतसस्त्राविणी अमृतं भव भव वषट् सुधाय स्वाहा ।
ॐ नमोगज गमने सर्वकल्याण मूर्तेरक्ष रक्ष नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३५

स्वर्गापवर्ग-गम-मार्ग-विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म-तत्त्व-कथनैक-पटु-स्त्रिलोक्याः ।
दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व,
भाषा-स्वभाव-परिणाम गुणैः प्रयोज्यः ॥ ३५ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

सारे संप्रदाय के जीव गांधौती में उपस्थित हैं । सारे जीव अपनी अपनी भाषा में भगवान की दिव्यता को समझ पा रहे हैं ।

सर्व संपत्ति लाभदायक

(धातु व्यापार में धन प्राप्ति)

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड दण्ड स्वामिन् आगच्छ आगच्छ, आत्ममन्त्रान्, आकर्षय-आकर्षय, आत्ममंत्रान् रक्ष रक्ष, परमंत्रान् छिन्द-छिन्द मम समीहितं कुरु-कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पो-सहि पत्ताणं झ्रां झ्रीं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३६

उन्निद्र-हेमनव-पंकज-पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन् नख-मयूख शिखाभिरामौ ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति ॥ ३६ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

देवगण २७ दिव्य स्वर्णिम कमल का निर्माण कर रहे है । तब भी उस पर चलने से भगवान के दिव्य चरण उस कमल को स्पर्ष नहीं कर रहे है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

दुष्ट वचन अवरोधक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवती अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ऊँ ह्रीं
मनोवांछित-सिद्धायै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो-सहि-पत्ताणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३७

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र,
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य ।
यादृक्प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक्कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि ॥ ३७ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भगवान आकाश में हैं, उनका स्थान समवसरणा के ठीक ऊपर है। बारह लोक की वहाँ उपस्थिति है, ऐसा दिव्य दृश्य कभी-कभी ही देखने को मिलता है। सूर्य के दिव्य रूप (चमक) के सामने बाकी के ग्रह बिलकुल प्रभावहीन (निस्तेज) दिख रहे हैं।

मदोन्मत्त गज वशीकरण कारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवते अष्टामहा नागकुलोच्चाटिनी कालद्रंष्ट्रमृतको त्थापिनी, पर मंत्र प्रणाशिनी देवि शासन देवते ह्रीं नमो नमः स्वाहा ।
ॐ ह्रीं शत्रु विजय रण रणाग्रे ग्राँ ग्रीं ग्रूँ ग्रः नमो नमः ॥

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण-बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३८

श्च्योतन् मदाविल-विलोल-कपोल मूल-
मत्त-भ्रमद्-भ्रमर-नाद-विवृद्ध-कोपम् ।
ऐरावताभ मिभ मुद्धत मापतन्तम्,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

गुस्से से उन्मत हुआ हाथी, जिस पर पतगिये मंडरा रहे है, उससे भक्तजन बिलकुल डरे हुए नहीं है । ऐसा होने पर उनके निकट जाते ही हाथी अपने आप शांत हो जाता है ।

सन्मार्ग दर्शक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो एषु दत्तेषु वर्द्धमान तव भयहंर वृत्ति ।
वर्णायेषु मन्त्राः पुनः स्मर्तव्या अतो ना-पर-मन्त्र निवेदनाय नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वयण-बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ३९

भिन्नेभ-कुम्भ-गलदुज्जवल-शोणिताक्त,
मुक्ताफल-प्रकर-भूषित-भूमिभागः ।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम युगाचल-संश्रितं ते ॥ ३९ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

अति क्रोधित सिंह, जिसने हाथी के मंदिर को तहस-नहस कर दिया है और लहू से लथपथ हाथी की हड्डियों को भी यहाँ-वहाँ फेंक दिया है परंतु आचार्य मानतुंग जैसे भक्तजन (अनुयायी) के सामने वह बिलकुल नम्र और शांत बन गया है।

अग्नि प्रकोप शामक यंत्र

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्राँ ह्रीं अग्निउपशमनं शांतिम् कुरु-कुरु स्वाहा ।
ॐ सौं क्रों ग्लौं सुन्दर पाय नमः ॥

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४०

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुख मापतन्तम्,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जंगल (वन) में आग लगते ही अपना जीवन बचाने के लिए सारे प्राणी इधर-उधर भाग रहे हैं । पर, सारे के सारे प्राणी आचार्य मानतुंग के पास आते हैं जो कि भगवान की भक्तिरूपी जलप्रवाह से जंगल की आग बुझाने की क्षमता रखते हैं ।

विष प्रभाव प्रतिरोधक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो श्रां श्रीं श्रूं श्रः जलदेवी पद्महृद निवासिनी,
पद्मोपरि-संस्थिते सिद्धिं देही मनोवांछित कुरु-कुरु स्वाहा ॥
ॐ ह्रीं आदिदेवाय ह्रीं नमः ॥

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरासवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४१

रक्तेक्षणं समद-कोकिल कण्ठ-नीलम्,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्कण-मापतन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंक-
स्त्वन्नाम-नागदमनी-हृदि यस्य पुंसः ॥ ४१ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

नागदमनी औषधिरूप भगवान के नाम का जिसने सहारा लिया हो वैसे भक्त के सामने अति क्रोधित साँप भी शांत और विनम्र बन जाता है ।

युद्ध अवरोधक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो णमिऊण विसहर-विस-प्रणाशन-रोग-शोक दोष-ग्रह-कप्प
दुमच्चजायइ सुहनाम गहण सकल सुहदे ॐ नमः स्वाहा

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोपासवाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा

श्लोक - ४२

वल्गत्तुरंग-गज-गर्जित-भीमनाद-
आजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम् ।
उद्यद् दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धम्,
त्वत् कीर्तिनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति ।। ४२ ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

युद्ध के मैदान में (रणसंग्राम में) दुश्मन की विशाल सेना के नाद का सामना करने के बाद भक्त ने भगवान का शरण लिया है । भक्ति के प्रभाव के कारण दुश्मन राजा ने भी अपने शस्त्रों का त्याग कर दिया ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

अस्त्र शस्त्र प्रभाव कारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी जिनशासन-
सेवाकारिणी-क्षुद्रोपद्रव-विनाशिनी
धर्मशान्ति कारिणी नमः शान्ति कुरु-कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४३

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारिवाह-
वेगावतार-तरणातुर-योध-भीमे ।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास-
त्वत्पाद-पंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते ।। ४३ ।।

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भक्ति के प्रभाव के कारण खून से लथपथ रण मैदान में भक्त हवा में ध्वज फरहरा रहा है ।

प्रलय तूफान भय निवारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुम्भकारणाय लंकाधिपतेय
महाबल पराक्रमाय मनश्चिन्तितं कार्य कुरु-कुरु स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमीआसवीणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४४

अम्भोनिधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्बण-वाड़वाग्नौ ।
रंगत्तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रा-
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ॥ ४४ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

समंदर में नैया तुफान के कारण हालक - डोलक हो रही है, मगरमच्छ आदि (etc) समुद्रीय जीव नौका को समंदर में उछालकर डूबाने का प्रयास कर रहे है; एँसी विपरित परिस्थिति में भक्त द्वारा भगवान का स्मरण करने पर नौका समंदर किनारे सलामत पहूँच जाती है ।

असाध्य रोग निवारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रव शान्तिकारिणी रोग
कष्ट ज्वरोपशमनं शान्ति कुरु-कुरु स्वाहा ।
ॐ ह्रीं भगवते भय भीषणहराय नमः ।।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४५

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः ।
त्वत्पाद-पंकज-रजोऽमृत-दिग्ध-देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः ॥ ४५ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जलोदर व्याधि से पिडीत दर्दी जीवन से हार मानकर वैद्य के पास बैठा, उसके परिवारजन भी चिंतित है। भगवान के चरण में पडे कमल की रज (Dust) को लेकर अपने उदर (Stomach/ पेट) पर रखने से उसका दर्द / व्याधि दूर हो जाता है।

कारागृह बंधन मोचक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठ ठ
जः जः क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः क्षयौः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धादयादमाणं झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४६

आपादकण्ठ-मुरु-श्रृंखल-वेष्टितांगा,
गाढं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः ।
त्वन्नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरंतः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भया भवन्ति ॥ ४६ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

जेल में बैडीयों के बंधन में बंधे भक्त ने भगवान का स्मरण करते ही (नाम लेते ही) उसकी सारी बेडीयाँ (chains) टूट गयी और वह बंधन मुक्त हो गया ।

अस्त्र शस्त्र निष्क्रिय कारक यंत्र

मन्त्र

ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः यः क्षः श्रीं हीं फट् स्वाहा ।
ॐ नमो भगवते उन्मते भय हराय नमः ।।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं
झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४७

मत्त-द्विपेन्द्र-मृगराज-दवानलाहि -
संग्राम-वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम् ।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

विविध प्रकार के डर से पिडीत भक्त ने जब प्रार्थना करना शुरु किया उसी वक्त उसके दुःख गायब हो गये और वह चिंतामुक्त (डरमुक्त) हो गया एवं उसे जीवन में खुशी और निर्भयता का एसास हुआ ।

सर्वाधीन कारक यंत्र

(धन-वैभव प्राप्ति के लिए)

मन्त्र

ॐ नमो भववते महिते महावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा झ्रां झ्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो बंभचारिणं अट्ठारस सहस्स सीलंगरथधारिणं नमः स्वाहा ।

ऋद्धि

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वासाहूणं ।

झ्रौं झ्रौं नमः स्वाहा ।

श्लोक - ४८

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र ! गुणै-र्निबद्धाम्,
भक्त्या मया रुचिर-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगता-मजस्त्रम्,
तं "मानतुंग"-मवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

हमारी आत्मा अनन्त शक्ति का अक्षय स्रोत है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)
Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com

भक्तामर के ४८ श्लोक के पहले अक्षर से अंकित ४८ फूलों से बनाई गई माला भक्त के हाथ में है । जो भक्त उस माला को अपने गले में पहनता है, मतलब जो भक्त भक्तामर स्त्रोत (श्लोक) का पठन करता है उसके सामने स्वयं लक्ष्मीदेवी उपस्थित होती है । आचार्य मानतुंग लक्ष्मी को मुक्ति के रूप में पाना चाहते हैं जबकि दुन्यवी मनुष्य उसे दन्यवी रूप में पाना चाहते हैं ।

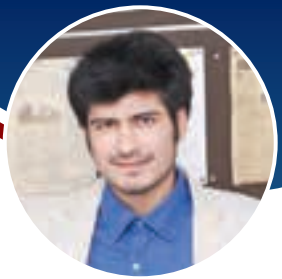

संक्षिप्त परिचय :
इंजिनियर सौम्य ए. मेहता

इंजिनियर सौम्य एक ऐसी युवा प्रतिभा है जिन्होने वास्तु-उर्जा परिणाम का ओन साइट एवं ओफ साइट अनुभव डो. अमरेश मेहता के साथ रहकर जुटाया है और BAU बायोलोजी का भी अभ्यास किया है और इतनी छोटी उम्र में बहुत सारी प्रोपर्टी के ओडिट के साथ भी जुडे हुए है ।

एक इंजिनियर होने के नाते वह वैज्ञानिक नियमो को ध्यान में रखकर और इसका इस्तेमाल करके वास्तु उर्जा ओडिट को एक नई उंचाइ तक ले जाने में और इस विधी में नये आविष्कार करने में जुडे हुए है एवं लोगो के जीवन में संपूर्ण शांति, समृध्धिऔर खुशहाली लाने के लिए सुचित अभिगम लाने में भी प्रयासरत है ।

वह संपूर्ण उर्जा समाधान के मंत्र में विश्वास रखते है और इस मंत्र की क्षमता का इस्तेमाल वह दोष ढूंढने में करने के पश्चात बांधकाम में बदलाव (तोडफोड) किये बगैर ही दोष निवारण करते है जो की उनकी सर्वश्रष्ठ क्षमताओ में से एक है ।

Disclaimer : Text, photos, drawings printed in this book which is to be distributed absolutely free might have been taken from other books, internet or somebody's private collection for which we are very much thankful & obliged. So any writer, painter or publisher if at all falls into this clarification, please accept our gratitude for this kind of noble work which is published for a purpose of healing of the people who are suffering from deep pain in various diseases.

संक्षिप्त परिचय :
डॉ. अमरेश मेहता

डो. अमरेश मेहता हमारे देश के गीनेचुने अग्रिम एनर्जी डायनामिक्स ओडिटर में से एक है । वह कई नोलेज सिस्टम्स के मान्यता प्राप्त विशेषज्ञ है । वह ख्यातनाम वास्तु, फेंगशुई एवं एनर्जी डायनामिक्स ओडिटर है जिन्हो ने सेंकडो बिमारु इमारतो एवं कारखानो को वाइब्रन्ट और नफाकारक युनिट में तबदिल कर दिया है ।

उनका कार्य तकनीक एवं विज्ञान पर आधारित है और वह अत्याधुनिक वैज्ञानिक साधनों का इस्तमाल करते है और विज्ञान के नियमो का अपने कार्य में इस्तमाल करते है । डो. मेहता ने विश्वभर में भ्रमण किया है और उन्हो ने अमरिका, केनेडा, ब्रिटन, फ्रान्स, जर्मनी, इन्डोनेशिया, इजिप्त, होंगकोंग, चीन, जपान, ताइवान, सिंगापोर, मलेशिया, थाइलेन्ड, संपूर्ण मध्य-पूर्व, सुदान, ग्रीस आदि देशों में १५०० से भी ज्यादा वक्तव्य दिया है ।

उन्हो ने जीवन के लिए कल्याणकारी भक्तामर स्त्रोत एवं नमोकार मंत्र की शक्तियो के प्रति जागरुकता जगाने के लिए एवं इस मंत्र की चक्र एवं आभामंडल पर क्या असर होती है उस पर जीवंत उदाहरण समेत संख्याबंधव्याख्यान भी दिये है ।

डो. अमरेश मेहता की इस कार्य में सहायता उनके पुत्र इंजिनियर सौम्य मेहता कर रहे है जो कि उपरोक्त सारी प्रवृत्तियो में शामिल है और वह समग्र कार्यप्रणालि के इनचार्ज है और उनकी सहायता समग्र बेक ओफिस सपोर्ट सिस्टम कर रही है ।

Dr. Amressh Mehta Ph.D. & M.D. (A.M.)

Vastu, Fengshui & Energy Dynamics Auditor

703, Abhijyot Square, Behind Divya Bhaskar House,
S.G. Highway, Ahmedabad - 380054. INDIA.
Ph.: 079-29706006 | M: +91 98250 48685
E-mail: amareshmehta@gmail.com
Website: www.amresshmehta.com
Follow on: www.facebook.com/DrAmresshMehta